समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 30 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

मार्क्सवादियों की बर्बरता का रक्तरंजित इतिहास

डॉ. किशन कछवाहा

जब से केरल में माकपा की सरकार बनी है, तब से अब तक भाजपा और संघ के लगभग 120 से अधिक कार्यकर्त्ता एवं स्वयंसेवकों की हत्यायें हो चुकी हैं। इनमें से ज्यादातर हत्यायें तो केरल के मुख्यमंत्री के आवास के आसपास के क्षेत्रों में हुयीं हैं। माकपा के नेता अपने आप को मानवाधिकारों का महान रक्षक प्रचारित करते हैं लेकिन केरल में खुले आम उनके द्वारा उनकी शह पर हो रही हत्यायें कहानी कुछ और ही कह रही हैं। केरल में जारी दमन पर मीडिया द्वारा प्रमुखता नही दी जा रही जिसके कारण सी.पी.आइ (एम) की करतूतें लोगों को पता नही है। लोकसभा सांसद रिचर्ड हे का कहना है कि केरल की मार्क्सवादी सरकार हिंसा पर लगाम लगानें में असफल रही है। ज्यादातर गरीब परिवारों के एकमात्र कमाने वालों को उनके द्वारा हिंसा का शिकार बनाया जाता है। ये कम्युनिष्ट अपने विरोधियों को उनके ही गॉव में उन्हें रहना मुश्किल कर देते हैं उनकी बहन–बेटियों की शादी नही हो पाती, क्यों कि उनके लिये रिश्ता लाने वालों को ऐन–केन–प्रकारेण डरा कर भगा दिया जाता है। लेनिन– स्टालिन एवं माओवादी परम्परा से पालित–पोषित भारत के कम्युनिष्टों से और आशा भी क्या की जा सकती है ? इनकी लोकतांत्रिक अवधारणा में आस्था न पहले थी, न आज है। सन् 42 के आजादी के आन्दोलन के दौरान इन्होंने न केवल आंदोलन कारियों का विरोघ किया वरन वे अॅग्रेजों के दलाल बने रहे, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को जापान के शासक टोजो का कुत्ता' कहने का कुकृत्य इनके द्वारा किया गया। 15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होने पर इन कम्युनिष्टों ने आजादी मानने से इंकार कर दिया, सन् 62 में चीनी आक्रमण पर चीन को हमलावर मानने से इंकार कर दिया। कहॉ तक इनके कुकृत्यों को गिनाया जाय ? अक्टूबर नवम्बर सन् 2007 में पश्चिम बंगाल की कम्युनिष्ट सरकार ने नन्दीग्राम में किसानों पर कहर बरसाया। प्रमुख कम्युनिष्ट नेता ई.एम.एस. नम्बूदरी–पाद ने 'भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास पुस्तक में स्वीकार किया है कि हमने भारत छोड़ो आन्दोलन का मुकाबला करने और सुभाषचन्द्र बोस का विरोघ करने की पूरी तैयारी करली थी। केरल में लाल आतंक का लम्बा इतिहास है। सन् 48,सन 52, सन 69, सन 70, सन 73, सन 74, सन 78, सन 81, सन 82, सन 84, सन 86, में इनके द्वारा निर्मम हत्यायें की गई। विश्व इतिहास साक्षी है जहॉ भी कम्युनिष्टों का शासन रहा है– वहॉ–वहॉ विरोघी विचार धारा को कुचल डालने के लिये खून की होली खेली गयी है। रूस से लेकर चीन, पूर्वी यूरोपीय देशों कोरिया, क्यूबा से लेकर भारत के तथा कथित लाल गलियारों में भी यही दृश्य दिखलायी दिया है। केरल में लोकतंत्र की हत्या हो रही है। माकपा के गुंडा तत्व कम्युनिष्ट पार्टी के कार्यकर्त्ताओं पर भी हमला करने से बाज नही आते। ये तत्व महिलाओं, बुजुर्गों और मासूम बच्चों पर भी दया नही दिखाते। हैरानी तो तब होती है जब केरल में निर्दोषों के खून से जिन के हाथ रॅगे हैं, वे दिल्ली में एकत्रित होकर अभिव्यक्ति की आजादी के लिये ढ़ोल पीटते हैं। वामपंथियों का झंडा ही लाल नही हैं बल्कि उनका इतिहास भी रक्त रंजित है। केरल में इस समय हिन्दुओं की हालत सबसे खराब है। उनकी जनसंख्या में 50 प्रतिशत से भी ज्यादा की कमी आ गयी है। इस समय वे दूसरे दर्जे क नागरिक बन कर रह गये है। उन्हें सब जगत नजर अन्दाज किया जा रहा है। किसी भी माओवादी राजनैतिक कार्यक्रम विवरण को देखें तो इस बात का अनुमान सहज ही लग जाता है कि वर्ग–शत्रु की हत्या और राष्ट्रीय विखण्डन के लिये सश्स्त्र युद्ध उनका प्राथमिक विश्वास है। कानू सन्याल ने स्पष्ट लिखा था कि'' सशस्त्र संघर्ष जमीन के लिये नही, राज्यसत्ता के लिये। वास्तव में मार्क्सवाद का सामाजिक समानता से भी कोई लेना देना नहीं है बल्कि सत्ता प्राप्ति के लिये है ही इसका अंतिम ध्येय है। बर्बर स्टालिन के शासन काल मे लाखों लोग मौत के घात उतार दिये गये। चीन में माओन्त्स तुंग के समय बेगुनाह लोग गाजर–मूली की तरह बेहिचक काट दिये गये। क्यों ? भारत में वामपंथ की जड़ें जमाने के लिये, विचार धारा के प्रचार के लिये और दक्षिण पंथ को अस्थिर करने के लिये विदेशों से आर्थिक सहायता. भी मिलती रही है – ऐसा कूटनीति विशेषज्ञों का मानना रहा है। लाल कामरेडों की बर्बरता सेकुलर मीडिया न छापता है, न दिखाता है। मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी की हिंसा की राजनीति का पर्दाफाश करने में रेडट्रोसिटी सेमिनार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। केरल में जारी दमन देश के सामने आना ही चाहिये।

माओवादियों की सांस्कृतिक क्रांति

चीन की तथाकथित ग्रेट प्रोलेटोरियन कल्चरल रिवोल्यूशन यानी सांस्कृतिक क्रांति में लाखों लोगों की जाने व्यर्थ चली गयी थी। करीब २० लाख लोगो की मौत, ४ लाख लोगों को बंदी बनाया गया और चीनी जनता पर बंदूक-तोप के दम पर वामपंथी विचारधारा थोपी गयी। स्टालिन (शासन काल १९२४-१९५३)के समय सोवियत संघ में और पॉलपाट के शासन काल १९७५-८० के बीच कंबोडिया में निर्दोष लोगों को विचार धारा के नाम पर कत्ल कर दिया गया।

भाजपा की संवेदना किसानों के साथ

वैश्वीकृत बाजारवादी अर्थव्यवस्था में आज दुनिया भर में सबसे ज्यादा कृषि और किसानों के समक्ष ही संकट है। मानव को जंगली जीवन से मुक्त कर सभ्य बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला कृषि क्षेत्र ही सबसे ज्यादा चुनौतियों का सामना कर रहा है। विश्व भर के किसानों के इस संकट से भारत भी अछूता नहीं रहा है। हम तो यूं भी एक कृषि प्रधान समाज हैं। ऐसे में अन्नदाताओं के सामने आये किसी भी खतरे को एक पेशा विशेष का संकट नहीं माना जा सकता। दरअसल किसानों पर आया कोई भी संकट मूलतः समूची सभ्यता का संकट माना जाना चाहिए। दुनिया का हर क्षेत्र आज भी इंतजार कर सकता है लेकिन खेती–किसानी के पास अब प्रतीक्षा के कुछ क्षण भी उपलब्ध नही है। लगातार बढ़ते कृषि लागत, महंगी होती मजदूरी, सतत हो रहे औद्योगिक और व्यावसायिक विकास के कारण श्रम शक्ति की कम उपलब्धता, कुछ हद तक प्रतिस्पर्धी दुनियावी बाजार में कायम रहने की विवशता, मौसम की मार, अति वृष्टि–अनावृष्टि, खंडवृष्टि आदि के खतरे, कम उपज (और कई बार बम्पर उत्पादन) के कारण होते नुकसान. ....ऐसी अनगिनत आशंकाओं और जोखिमों के बीच भी कृषि कार्य में जमे रहना, देश की सवा अरब जनसंख्या की क्षुधा तुप्ति हेतु सतत खुद का पेट पीठ से चिपकते जाने के बावजूद, एक सैनिक की दृढ़ता के साथ, और उतनी ही परेशानियों को झेलते हुए राष्ट्र की सेवा को तत्पर किसान बंधू–भगिनी भी देश के जवानों की तरह ही प्रणम्य हैं। जिस तरह हम आज अपने जवानों के कारण सुरक्षा संबंधी मामलों से निश्ंचित हैं, जहां दुनिया भर में कृषि को घाटे का सौदा समझ लिया गया है, वहॉ भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अगले पांच वर्ष में किसानों की आय दोगुना करने के संकल्प के साथ जुटे हुए हैं। यह तथ्य है कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी ने भी भाजपा सरकार के इस संकल्प की सिद्धि में परिश्रम की पराकाष्ठा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी है। किसानों के हितार्थ किए जा रहे अनेक प्रयासों की कड़ी में पिछले दिनों एक स्वर्णिम अध्याय और जुड़ गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंन्द्र मोदी जी से अनुमति लेकर डॉ. रमन सिंह जी ने किसानों को दो वर्षो के लिए प्रति क्विंटल 300 रूपए बोनस की घोषणा की है। केवल घोषणा ही नही। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक किसानों के बैंक खातें में बोनस की यह राशि पहुंचना प्रारंभ भी हो चुकी है। निस्संदेह दीवाली से पहले ही अपना धान बेचकर उसका समर्थन मूल्य पा चुके प्रदेश के तेरह लाख किसानों के घर भाजपा सरकार का यह उपहार पहुंच चुका होगा। प्रदेश शासन का यह विनम्र योगदान निश्चय ही किसान बंधुओं की दीवाली को ज्यादा प्रकाशमान, प्रदेश क माटीपुत्र–पुत्रियों के मन को जरा और ज्यादा प्रफुल्लित कर चुका होगा। घाटे के बावजूद बोनस के लिए 2100 करोड़ जितनी बड़ी राशि उपलब्ध कराने का निर्णय आसान तो बिल्कुल नहीं था । ऐसा साहसिक निर्णय' लोकशास्त्र' को ध्यान में रख कर ही लिया जा सकता है। काफी बड़े दिल के साथ मुख्यमंत्री ने अलग से बैंकों से कर्ज लेकर खुशियां बिखेरने का यह कार्य किया है। प्रतिकूलताओं के बावजूद इस मानवीय निर्णय के लिए प्रदेश शासन की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम ही होगा अपने ऐसे कार्यों के कारण भाजपा की सतत बढ़ती लोकप्रियता से कांग्रेस हलाकान है। अनेक गुटों में विभाजित प्रदेश कांग्रेस, मुद्दों के अभाव के कारण ऊल–जुलूस आरोपों के साथ अपनी खीज निकालने की असफल कोशिश में जुटी है। न केवल किसान बल्कि हर वंचित वर्ग के हितों से कांग्रेस ने हमेशा खिलवाड़ ही किया है। राज्यसभा में जरा सा मौका क्या मिला, उसने अपनी प्रकृति के अनुरूप ही पिछड़े वर्ग के हितों पर जबरदस्त कुठाराघात कर दिया। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा देने संबंधी विधेयक को राज्यसभा में गिराने के कृत्य से प्रदेश भर के पिछड़े वर्गों में जबरदस्त आक्रोश का प्रदर्शन समूचे छत्तीसगढ़ में भरी पिछले दिनों हुआ।

छत्तीसगढ़ विधानसभा: 'कॉमन सिविल कोड' अशासकीय प्रस्ताव पारित

पिछले दिनों माननीय कोर्ट ने त्वरित तीन तलाक को अवैध घोषित कर वास्तव में एक ऐतिहासिक फैसला दिया है। निश्चय ही इस फैसले की गूंज अगले अनेक दशकों तक महसूस की जाती रहेगी। या यह भी कहा जा सकता है कि जब तक किसी समाज में महिलाओं को अपने पुरूषों के समकक्ष जीने का अधिकार नही मिल जाता, तब तक यह फैसला बार– बार स्मरण करने योग्य होगा। भारत के बड़े तबके की मातृ शक्ति को इस तरह न्याय मिलना केवल उनकी ही जीत नही, बल्कि यह हर उस भारतीय की जीत होगी 'जो एक राष्ट्र –एक कानून' में भरोसा करता है। देखा जाये तो हमेशा भारत की न्यायपालिका इस मामले में भी सजग रही है। कांग्रेस के स्व. राजीव गांधी के प्रधानमंत्री रहने के दौरान अगर एक मुस्लिम महिला शाहबानें को दिलाये गए चंद रूपये के गुजारे भत्ते को रोका नही गया होता, एक गरीब महिला को अगर उसके हक से तुष्टीकरण के कारण वंचित नही किया गया होता तो अब तक देश 'समान नागरिक संहिता' की तरफ भी निर्णायक कदम बढ़ा चुका होता। वस्तुतः कांग्रेस इस बात के लिये जिम्मेदार है कि उसने अपने प्रचण्ड़ बहुमत के अहंकार में असलियत को कम से कम चार दशक पीछे धकेल दिया। जहां शाहबानों मामलें में कांग्रेस के कृत्य हो हमेशा अल्पसंख्यक के नाम पर राजनीति करने के एक खराब उदाहरण के रूप में याद किया जायेगा। वही हाल में शायरा बानों समेत तीन महिलाओं द्वारा जारी संघर्ष को समर्थन और स्वर देकर भाजपा सरकार ने पार्टी का अपना सर्वसमावेशी चेहरा एक बार और प्रस्तुत किया है। वस्तुतः शाहबानों और शायरा बानो, इन दो मामलों में केन्द्र की दोनो सरकार द्वारा उठाये गये कदम को ही आन दोनों दलों की सोच और आचरण के फर्क के रूप में भी निरूपित कर सकतें है। प्रसंगवश यह लिखना उचित होगा कि मेरे लिये यह सौभाग्य की बात है कि छत्तीसगढ़ विधानसभा में प्रस्तुत मेरे एक अशासकीय संकल्प 'देश में समान नागरिक संहिता लागू की जावे' को छत्तीसगढ़ विधानसभा ने चर्चा के पश्चात पारित किया है। इस पर छत्तिसगढ़ शायद इस मामलें में पहला प्रदेश साबित हुआ है जिसने राष्ट्र की अखण्डता से संबंधित इस प्रस्ताव को पारित कर केन्द्र शासन को भेजा है। अपने आचरण के अनुरूप मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने यहाँ भी इस संकल्प का विरोध किया, हालाकि भाजपा के माननीय सदस्यों ने एकमत से इस संकल्प का समर्थन कर प्रदेश को इस मामले में भी देश में प्रथम बनाने में अपना योगदान दिया। इस आशासकीय संकल्प पर चर्चा के दौरान इस लेखक ने इस विडंबना की तरफ सदन का ध्यान आकृष्ण भी किया था कि एक तरफ हमने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

वह हृदय नहीं पत्थर है, जिसमें बहती रसधार नही

मनुष्य जीवन प्रेम के बिना रसहीन है, आनंदविहीन है। प्रेम, जीवन में सार्थकता का बोध कराता है और जीवन को सरस, सुंदर व अर्थपूर्ण बनाता है, लेकिन प्रेम के वास्तविक स्वरूप को पाना भी सरल नही हैं प्रेम का घनिष्ठ संबंध मनुष्य की शुद्धतम भावनाओं से है। भावनाएँ यदि पवित्र है, तो वहाँ प्रेम पनपता है और वह भक्ति में रूपांतरित होता है, लेकिन यदि भावनाओं में स्वार्थ, आसक्ति व इच्छाओं का मेंल हो जाये, तो यही प्रेम कलुषित हो जाता है, दूषित हो जाता है। प्रेम क्या होता है? इसके बारे में कवियों, दार्शनिकों, लेखकों व विचारकों ने बहुत कुछ कहा व लिखा है। प्रेम, भावनाओं का एहसास है, जिसे शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। अरस्तु कहते हैं कि ''जहाँ प्रेम है वही जीवन का सही रूप है।'' बेकन के अनुसार – 'प्रेम समर्पण व जिम्मेदारी का दूसरा नाम है।' जॉर्ज बर्नाड शॉ के अनुसार – 'जीवन में प्रेम का वही महत्व है, जो फूल में खुशबू का होता है।' राष्ट्रपिता गांधी के अनुसार – 'प्रेम कभी दावा नही करता, वह हमेशा देता है। प्रेम हमेशा कष्ट सहता है, न कभी झुँझलाता है और न ही कभी बदला लेता है।' कन्फ्यूशियस के अनुसार–'प्रेम, आत्मा की खुराक है।' प्रेम को आनंदित जीवन की शुरूआत कहा जा सकता है। प्रेम के कोमल स्पर्श से ही जीवन खिलता है, फलता–फूलता और विकास करता है। जहाँ प्रेम नही होता, वहाँ जीवन भी मुरझा जाता है, नीरस हो जाता है, काँटों के सदृश्य हेाता है। यहाँ तक की एक छोटे से पौधे को भी सही ढ़ंग से विकसित हेाने के लिये देख–भाल की, प्यार की जरूरत पड़ती है। यदि उस पर ध्यान न दिया जाये तो वह भी मुरझा जाता है, मर जाता है, जीवन की आशा को खेा देता है। इसी तरह से व्यक्ति को अपना पन मिलता है, सच्चा प्रेम मिलता है, तब उसे अपना जीवन सार्थक लगता है, अर्थपूर्ण प्रतीत होता है। लेकिन जब व्यक्ति को हर तरफ से उपेक्षा मिलती है, तिरस्कार मिलता है, तो उसे अपना जीवन व्यर्थ प्रतीत होता है। आज संसार में प्रेम की कमी हो गई है। प्रेम के नाम पर छल, विश्वासघात, धोखा देखने को मिलता है और इसलिये आज व्यक्ति विभिन्न प्रकार के तनावों व मनोरोगों से घिरा हुआ नजर आता है। युगऋषि परमपूज्य् गुरूदेव आचार्य श्री राम शर्मा के शब्दों में–व्यक्ति की दबी, कुचली व रौंदी गई भावनाएँ ही मनोरोगों का कारण है और यदि इन्ही भावनाओं को सॅवारा जाये, इनकी देख–भाल की जाये, तो यही भावनायें मन के सर्वोत्तम विकास का कारण बनती हैं। इन भावनाओं को खुराक व पोषण मिलता है– प्रेम से, अपनत्व से। प्रेम, मानवीय व्यक्तित्व का मूल है। इसका हमारे अस्तित्व के साथ गहरा संबंध है। जिस तरह श्वास लेना शरीर की आवश्यकता है, बिना श्वास के शरीर जीवित नही रह सकता, उसी तरह प्रेम हमारी अंतरात्मा की श्वास है। अंतरात्मा को प्रेम से तृप्ति मिलती है। प्रेम का दायरा यदि अपनों तक सीमित है तो वह व्यक्तियों को तृप्त नही कर पाता, परन्तु उसका प्रेम असीम हो जाये तो वह उसके लिये अपार आनंद का माध्यम बन जाता है। जिसके प्रेम का दायरा संपूर्ण विश्व बन जाता है, वह व्यक्ति फिर सामान्य व्यक्ति नही, महापुरूष –महामानव बन जाता है, संत बन जाता है, क्योकि उसका प्रेम जलस्त्रोंत की तरह हो जाता है, जिससे अनगिनत लोग अपनी प्यास बुझा सकते है, तृप्त हो सकते है, जिसकी प्रेम पूर्ण छाँव में आकर अनगिनत व्यक्ति असीम शान्ति का अनुभव करते है। इसलिये संत महात्मा पूज्यनीय होते है, क्योंकि उनका प्रेम सभी के लिये समान होता है, भेदभाव पक्षपात से रहित होता है। प्रेम की अनुभुति व्यक्ति को तृप्त करती है, जबकि प्रेम का अभाव व्यक्ति को इतना अतृप्त बनाता है कि संसार का कोई भी वैभव उसको संतुष्ट नही कर पाता। एक सामाझी ने मृत्यु के उपरान्त अपनी कब्र के पत्थर पर इन पंक्तियों को लिखना का आदेश दिया था–'' जो व्यक्ति अत्यधिक निर्धन और अशक्त हो, वह उसकी कब्र खोदकर धन प्राप्त कर सकता है।'' उस कब्र के पास से अनेक दरिद्र और भिकमंगे निकले, लेकिन उनमें से कोई भी इतना दरिद्र नही था कि धन के लिये किसी की कब्र खोदे। फिर अंततः वह व्यक्ति भी आ पहुँचा, जिसकी दरिद्रता इतनी थी कि वह उस कब्र को खोदे बिना नही रह सका। वह व्यक्ति कौन था ? वह एक सम्राट था, जिसने अभी–अभी वह देश जीता था। वहाँ आते ही उसने सबसे पहले कब्र खोदने का कार्य शुरू करवाया। पर उस कब्र में उसे अपार धनराशि की जगह मात्र एक पत्थर मिला, जिस पर लिखा हुआ था– 'मित्र क्या तुम मनुष्य हो ? निश्चय ही जो मनुष्य है, वह मृतक को सताने के लिये कैसे तैयार हो सकता है ? लेकिन जो धन के लिये जीवित केा भी मृत बनाने के लिये सहर्ष तैयार हेा, उसे इससे क्या फर्क पड़ता है ? यह कथानक इसी सनातन सत्य को सिद्ध करता है कि जिस व्यक्ति के हृदय में प्रेम नही है, वही दरिद्र है, वही दीन है, वही अशक्त है। प्रेम ही शक्ति है, प्रेम ही संपदा है और प्रेम ही प्रभुता है।

आजादी के बाद 'स्व' को भुला दिया

—कन्हैया लाल चतुर्वेदी

भारत कृषि प्रधान देश है। हजारों वर्षों से भारत एक राष्ट्र के रूप में इस धरा पर विद्यमान है और हिन्दुत्व इस राष्ट्र की आत्मा हैं। इसी प्रकार कृषक और गोमाता इसके प्राण हैं। किसान और गाय को अलग किया ही नहीं जा सकता। ये अन्योन्याश्रित हैं और भारत राष्ट्र इन पर आश्रित है। अपने देश में कृषि को इसीलिये 'उत्तम' बताया गया है। नौकरी या चाकरी को निकृष्ट माना गया है और भीख तो आखिरी उपाय है ही। अपूर्व ज्ञान के भण्डार वेदों में कृषि और कृषक की महत्ता बखानी गई है। खेती का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है और गोधन को सबसे बड़ी सम्पति माना गया है। वेदों के अतिरिक्त अनेक विद्वानों ने कृषि पर मूल्यवान ग्रन्थ लिखे। उन सभी प्राचीन ऋषियों, विद्वानों, वैज्ञानिकों के खेती पर लिखे ग्रन्थों का सही मनः स्थिति से अध्ययन किया जाये तो मूल्यवान सूत्र हमें प्राप्त हो सकते हैं। आचार्य विष्णुगुप्त 'चाणक्य' के 'अर्थशास्त्र' में कृषि पर एक पूरा खण्ड है, जिसमें महात्मा चाणक्य ने कृषि और परिणाम स्वरूप राष्ट्र की समृद्धि का पूरा विवरण प्रस्तुत किया है। इसलिये राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति कृषि पर निर्भर हैं। खेती समृद्ध होगी तो राष्ट्र समृद्ध होगा। किसान खुशहाल होगा तो पूरा देश खुशहाल होगा। किसान की उपेक्षा से देश आगे नही बढ़ सकता। स्वतंत्रता मिलने के सत्तर साल बाद आज हमारी स्थिति क्या है ? वास्तव में 15 अगस्त 1947 को हमें राज्य तो प्राप्त हो गया, स्वराज्य हमने प्राप्त कर लिया किन्तु अपना 'तन्त्र' हमें नही मिला। सही अर्थों में हम स्वतंत्र नहीं हुए। पं. दीनदयाल जी उपाध्याय ने एक बार कहा था – अंग्रेजों के चले जाने के बाद आवश्यक है कि हमारा देश आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में भी स्वतंत्रता अनुभव करें। लेकिन आजादी के बाद हमने अपने 'स्व' को बिल्कुल ही भुला दिया। भारतीय संस्कृति जो वस्तुतः हिन्दू संस्कृति है को हमने कतई नकार दिया। हमारा अपना भी कुछ है, एक उन्नत विज्ञान रहा है उन्नत विचार–सारणी रही है, प्रत्येक क्षेत्र में हजारों वर्षों का अनुभव और

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

पृष्ठ क्रं. 3 का शेष भाग

ज्ञान–भण्डार

रहा है, इसकों हमने भुला दिया। इसके स्थान पर एक विचित्र और राष्ट्र–घातक विचार को हमने पकड़ लिया, कि हम एक कई तरह राष्ट्र बन रहे है(We are a Nation in the Making) की भ्रामक और विनाशकारी, अवधारणाओं को हमने पकड़ लिया। सबसे खतरनाक अवधारणा तथाकथित 'सेकुलरवाद' की है। ऐसी ही पश्चिमी और अधकचरी मान्यताओं, सिद्धान्तों को हमने ओढ़ लिया। राष्ट्र के सम्बन्ध में हमने यूरोपीय परिभाषा को अपनाया, ध र्म और मजहब को एक कर दिया, रिलीजन का अर्थ धर्म कर दिया, साम्प्रदायिकता के मायने बदल दिये और प्रगति के पूर्ण रूप से पश्चिमी और अधूरे मापदण्ड अपना लिये। हम सिंह थे, पर सियारों के बीच सात–आठ सौ सालों तक रहने के कारण हम सियार बन गये हैं और हमें पुनः अपना सिंह–स्वरूप धारण करना है, इसका ध्यान तत्कालीन नेतृत्व को आया ही नहीं। किसी को आया भी तो सेकुलरवाद के नक्कारखाने में वह आवाज दब गईं परिणाम यह हुआ कि हमने कभी रूस की नकल की तो कभी अमरीका की नकल करने की असफल कोशिश की । राष्ट्रीय हितों की अनदेखी करते हुए यूरोप की आधी – अधूरी विचारधाराओं को ही आदर्श मान लिया। इसलिये सहकारी खेती का आत्मधाती प्रयोग किया गया। फिर हरित क्रांति के नाम पर रासायनिक खेती, मशीनी खेती को अपना लिया। समय के साथ बदलना आवश्यक होता है। मशीनें और कृत्रिम खाद हैं तो, उनका उपयोग नही करना बुद्धिमानी नहीं है। किन्तु इनके दूरगामी परिणामों का विश्लेषण किये बिना इन पर टूट पड़ना भी समझदारी नहीं है। आधुनिकतम तकनीक का उपयोग स्वदेशी आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के हिसाब से करना होता हैं। लेकिन अंधा–धुंध रासायनिक खाद व कीटनाशकों ने हमारी रत्नगर्भा भूमि को बंजर बना दिया और तीन पीढ़ियों को भयावह रोगों की सौगात दे दी। दूसरी और अनिर्बन्ध मशीनकरण ने बड़े किसानों को तो समृद्धशाली बना दिया पर छोटे किसान निर्धन होने लगे। निर्धनता की मार झेलने वाला किसान गॉव छोड़ शहरों की ओर भागने लगा। चाकरी उत्तम हो गई और 'कृषि' निकृष्ट बन गई। आज देश का भाग्य विधाता किसान इसी स्थिति से जूझ रहा हैं हमारे कृषक अत्यन्त जीवट वाले लोग हैं। ऐसा जीवट किसी में नही है। सीमित साधनों और प्रकृति की अतिवृष्टि–अनावृष्टि आदि की मार के बीच चह हिम्मत से फसल पैदा करता है तो उसे फसल की सही कीमत नहीं मिलती। कभी–कभर उचित मूल्य मिल जाता है तो बिचौलिये उसे हड़प लेते हैं। बिजली की समस्या से वह लगातार जूझता है। अन्ततः पूरे देश का पेट भरने वाले किसान खुद भूखे रह जाते है। इसलिये किसान और खेती की स्थिति में क्रांतिकारी सुधार जरूरी है। खेती में नये और समयानुकूल परिवर्तन जरूरी हैं, शहर की ओर जाते किसान का मार्ग पुन' अपने गॉव की ओर मोड़ना जरूरी है।

खेत का पानी खेत में – गॉव का पानी गॉव में

3290 लाख हेक्टेयर कुल भू–क्षेत्र वाला भारत, विश्व का सबसे बड़ा देश है। प्रकृति में उसे विभिन्न प्रकार की जलवायु और मृदा(मिटट्ी) प्रदान की है। वनस्पतियों के भॉति प्राणियों की आनुवांशिक विविधता भारत में भरी पड़ी हैं। क्या वर्तमान बदलते वातावरण में हम अपनी आवश्यताओं को पूरा कर सकने में सदैव समर्थ बने रहेंगे ?

व्यर्थ होता पानी :– ऐसी कृषि पद्धतियें एवं फसलों का विकास करने की भी आवश्यकता है जो कम से कम पानी में अधिक से अधिक गुणवत्ता युक्त उपज दे सके। आज देश में जितनी वर्षा होती है उसका मात्र 26 प्रतिशत हिस्सा ही संग्रहित हो पाता है। भूमि की ऊँची–नीचि प्राकृतिक बनावट के साथ ही जल संरक्षण तकनीकों के अभाव के कारण वर्षा का पानी अबाधगति से बहता हुआ ढ़ेर सारा उपजाऊ मिट्टी एवं पोषक तत्वों के साथ छोटे–बड़े नालों से होता हुआ नदियों मे जा मिलता है। **जन आन्दोलन आवश्यकः–** 'खेत का पानी खेत में, गॉव का पानी गॉव में' संकल्प के साथ एक जनआन्दोलन द्वारा ही हम इस गंभीर संकट से निपट सकते है। इसके लिये जल प्रबंधन पर अनुशासन एवं परंपरागत जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन एवं विकास के पुरजोर प्रयास करने होंगे। भूमि एवं जल हमारी अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा हैं। भूमि आधार प्रदान करने के साथ–साथ वनस्पतियों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का प्रमुख साधन भी है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग बहुत सूझ–बूझ के साथ करना होगा। पहाड़ी नालों पर बोल्डर के बंधान से तेज पानी के बहाव को रोककर जमीन के कटाव को रोका जाता है समय से बुवाई होने पर फसलों में ठीक समयपर वानस्पतिक वृद्धि होती है जो भूमि एवं जल संरक्षण में सहायक होती है।

अक्टूबर माह के विशेष दिन

15.10.17	–	डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम जयंती
17.10.17	–	धन्वंतरी जयंती धनतेरस
19.10.17	–	स्वामी दयानन्द निर्वाणोत्सव
19.10.17	–	दीपावली
21.10.17	–	पुलिस स्मृति दिवस
24.10.17	–	गुरू गोन्विद सिंह पुण्यतिथि
29.10.17	–	अक्षय नवमी
31.10.17	–	सरदार पटेल, सन्तनामदेव एवं कविकालिदास

पृष्ठ क्रं. 1 का शेष भाग

खुद को घोषित किया है, वही दुर्भाग्यजनक स्थिति यह है कि हमारे देश में हर सम्प्रदायों का अपना लॉ है। क्रिमिनल लॉ भले सबके लिये समान हेा लेकिन सिविल लॉ में हर संप्रदाय का अपना कानून होना कही से भी उपयुक्त नही कहा जा सकता। अगर हम अपने आपको धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में मानते है तो सभी प्रकार के कानून देश के सभी नागरिकों के लिये एक समान होना ही चाहिये।

— शिव रतन शर्मा

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com